भगवान अकारण करूण है यानी बिनशर्त कृपा करते है।
भगवान की कृपा की शर्त शरणागती है।

कृपा शब्द का अर्थ है कि बगैर कोई बदले में लिए दूसरे का उपकार करना। हमारे पास जो भी शरीर आदि सब है, भगवान का ही दिया हुआ है। बदले में भगवान को हमने क्या दिया? कुछ दे भी नही सकते। इसलिए भगवान की हम पर अनंत कृपा है। उसकी कृपा का कोई ओर छोर नही है। वैसे देखा जाय तो जो भी हो रहा है, अच्छा या बुरा, भगवान की कृपा है। लेकिन कुछ मोटी कृपा देखते है। पहली कृपा उसने इस ब्रह्मांड का निर्माण हमारे लिए किया। लेकिन आप सोच सकते हैं कि हमको इससे क्या लाभ?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

दूसरी कृपा उसने हमारे लिए सभी आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराया है, ताकि हम जीवित रह सकें। तथा विश्व के प्रत्येक कण में व्याप्त हो गया ताकि ब्रह्मांड सुचारू रूप से चल सके। आप कहेंगे , 'अगर उसने ब्रह्मांड बनाया है तो उसे चलाना तो पडेगा ही।'

अगली कृपा ये की भगवान ने हमें मनुष्य जन्म दिया। वह प्रत्येक जीव के मन में एकाउंटेंट की अवैतनिक नौकरी करने के लिए बैठे - कर्मों का हिसाब रखना और उसके अनुसार फल देना। आप कहेंगे 'लेकिन हम इस कार्रवाई के कारण भी पीड़ित हैं क्योंकि पाप कर्मों का दंड भोगना पड़ता है।'

लेकिन केवल मनुष्य जन्म मिलने से क्या लाभ? हमें पता तो चले कि हम कौन है? हम क्या चाहते है? वो कैसे मिलेगा? इसलिए अगली कृपा यह है कि भगवान इस धरती पर कई बार आये और हमें समझाया कि क्या किया जाना चाहिए, जिससे हमारे कष्ट समाप्त हो और हमें परमानंद मिल जाय। यदि वह पर्याप्त नहीं था, तो उसने अपने जनों को यानी संतों को भेजा - संतों ने हमें

मानव जीवन का अर्थ समझाया। हमारे दुःखों का मूल कारण बताया कि हम अनंत सुखसागर भगवान को भुलकर इस दुःखमय संसार में वो शाश्वत सुख ढुंढ रहे है जो इस संसार में है ही नही। जैसा प्यार हम इस संसार से कर रहे है वैसा ही प्यार हमें भगवान से करना है। प्यार का तरीका एक ही है, बस संसार की जगह भगवान को अपना मानना है। आप कहते हैं, 'हमें संतों और उनके उपदेशों में कोई दिलचस्पी नहीं है'।

फिर भगवान क्या कर सकते हैं? अगर किसी एक सच्चे संत द्वारा निर्देशित मार्ग का पालन करते हैं तो दिल के पूर्ण शुद्धिकरण पर सभी पीड़ाओं और मृत्यु से छुट्टी पाकर और उसे अनंत और शाश्वत खुशी प्राप्त कर लेते। यह सबसे बड़ी कृपा है।

इस कृपा के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए हमें भगवान की शरणागती स्वीकार करनी पडेगी। इसका मतलब भगवान की कृपा का मूल्य है। जी नही। शरणागती का अभिप्राय यह है कुछ न करना। मन एक है उसे या तो जीव कंट्रोल करे या भगवान। मन पर नियंत्रण रखना जीव के बस का है ही नही तो जीव अपने मन का कंट्रोल भगवान के हाथ में देता है। जीव भगवान के शरणागत मात्र रहता है। तो भगवान मन की कमीयों को निकालकर , उसे शुद्धकर, उसे दिव्य बनाकर उसमें अनंत दिव्यानंद भरकर जीव को सदा के लिए मालामाल कर देते है।

अतः दोनो कथन सही है
भगवान अकारण करूण है यानी बिनशर्त कृपा करते है।
भगवान की कृपा की शर्त शरणागती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132